INTERNATIONAL INSIGHTS
JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

www.insightresearch.org.in
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed
Open Access Journal
Volume-3, Issue 2, April-June 2026
ISSN : 3049-0847
IMPACT FACTOR : 7.725
https://doi.org/10.5281/zenodo.19614074

भारतीय राजनीतिक विचारधारा का विकास : प्रारंभ से संविधान और अमृतकाल 2047 तक

राजेश कुमार
सहायक आचार्य राजनीति विज्ञान
आई ए एस ई मानित विश्वविद्यालय
सरदारशहर चुरू
Email.id-rk24540@gmail.com

सारांश

भारत का राजनीतिक चिंतन अत्यंत प्राचीन है जिसकी जड़ें वैदिक युग तक जाती हैं। भारतीय राजनीतिक विचारधारा का विकास प्राचीन काल से प्रारंभ होकर आधुनिक संविधान और उसके बाद के विकास के माध्यम से 2047 के अमृतकाल तक एक सतत प्रक्रिया रही है। भारतीय राजनीतिक चिंतन पाँच हजार वर्षों से अधिक प्राचीन है और उसमें धर्म, आध्यात्म,नैतिकता तथा समाज से संबंधित विचार व्यापक रूप से मौजूद हैं। रामायण, महाभारत,मनु,कौटिल्य जैसे ग्रंथों से राज्य,न्याय, शासन और समाज के मध्य संबंधों की महत्वपूर्ण राजनीतिक अवधारणा मिलती है। भारतीय राजनीतिक दर्शन में सत्य, धर्म, मोक्ष,कर्मफल तथा सामाजिक व्यवस्था जैसे सिद्धांतों का समावेश है जो एक समन्वित और स्थिर प्रणाली प्रस्तुत करते हैं। अग्रेंजों के शासनकाल में भारतीय राजनीति में नई सोच और संस्थागत बदलाव आए। 1773 के रेगुलेटिंग एक्ट से प्रारंभ होकर 1947 के भारत शासन अधिनियम तक विभिन्न कानून और सुधार होते रहे जिसने भारतीय संविधान के विकास की नींव रखी। भारतीय संविधान सभा का गठन 1946 में हुआ और 26 जनवरी 1950 को संविधान प्रभावी हुआ। भारतीय संविधान ने संसदीय लोकतंत्र,संघीय ढाँचा और मौलिक अधिकारों की स्थापना की जो आधुनिक भारतीय राजनीतिक विचारधारा का प्रमुख आधार हैं। 2047 तक भारत के राजनीतिक विकास और लोकतांत्रिक संस्थाओं की मजबूती के लिए नीति आयोग द्वारा विजन इंडिया@2047 परियोजना शुरू की गई है। यह परियोजना अगले 25 वर्षों में भारत के समग्र विकास और शासन सुधार की रूपरेखा प्रस्तुत करती है। इसमें आर्थिक, सामाजिक,राजनीतिक क्षेत्र में सुधारों पर जोर दिया गया है ताकि भारत एक विकसित राष्ट्र बन सके। प्रधानमंत्री ने भी वर्ष 2047 तक विकसित भारत के सपने को साकार करने हेतु शासन सुधारों के महत्व को रेखांकित किया है इस प्रकार भारतीय राजनीतिक विचारधारा का विकास प्राचीन वैदिक और धार्मिक मूल्यों से प्रारंभ होकर आधुनिक संविधान द्वारा संस्थागत रूप पाने तक पहुंचा है तथा आगामी अमृतकाल 2047 में इसे और सशक्त,समृद्ध और लोकतांत्रिक बनाने का लक्ष्य स्थापित है।

बीज शब्दः-अमृतकाल,2047,राजनीतिक चिंतन,न्याय,समानता,राज्य,लोकतंत्र,विजन, अधिगम, नवाचार, नेतृत्व

वैदिक कालीन राजनीतिक चिंतन

ऋग्वेद में राजा (राजन) को समाज का रक्षक और धर्मपालक माना गया। वैदिक काल का राजनीतिक चिंतन, आध्यात्मिक,नैतिक और लोककल्याणकारी सिद्धांतों पर आधारित था जिसमें राजा पर नियंत्रण,संस्थाओं की भूमिका और समाज के कल्याण को नीति का आधार माना गया

राजा की भूमिका: वैदिक काल में राजा जन (कबीले) का प्रधान होता था जिसे जनता बदल भी सकती थी. वह युद्ध का नेतृत्वकर्ता, न्याय और धर्म का पालन कराने वाला तथा समाज की रक्षा करने वाला माना जाता था

राजत्व का सिद्धांत: राज्य और राजा की उत्पत्ति को दैवीय (ईश्वर प्रेरित) माना गया जिसमें समाज,धर्म और राजनीतिक संरचना का आपसी समन्वय था

संस्थाएँ: सभा,समिति और विदथ जैसी लोकप्रिय संस्थाएँ थीं जो राजा के चयन,नीति निर्धारण और लोकहित से जुड़ी थीं. सभा श्रेष्ठ लोगों की संस्था,समिति आम प्रतिनिधि सभा तथा विदथ सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों के लिए थी.
अधिकार: राजा वंशानुगत तो होता था लेकिन उसकी नीति और शासन पर सभा-समिति नियंत्रण रखती थी.

राज्य और धर्म: राज्य को धर्म,अर्थ और मोक्ष प्राप्ति का आधार माना गया जिसमें सत्ता का कार्य धर्म और न्याय की स्थापना था. राज्य व्यवस्था का उद्देश्य सामाजिक समरसता और मोक्ष प्राप्ति रहा।

आर.सी. मजूमदार के अनुसार वैदिक राजत्व का मुख्य उद्देश्य धर्म की रक्षा और सामाजिक सद्भाव था। प्रारंभिक राजनीतिक सोच धार्मिक अनुष्ठानों और नैतिक दायित्वों से जुड़ी थी।

कौटिल्य और अर्थशास्त्र

कौटिल्य (चाणक्य) ने अर्थशास्त्र में राजनीति को आदर्शवाद से अलग कर व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत किया।

सप्तांग सिद्धांत (राज्य के सात अंग – राजा, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, सेना, मित्र) इन अंगों की तुलना मानव शरीर के अंगों से की जाती हैए जो राज्य की संरचना को व्यावहारिक और कार्यकुशल बनाते हैं

मंडल सिद्धांत – कूटनीति और विदेश नीति का व्यावहारिक दृष्टिकोण।कौटिल्य ने राज्यों के संबंधों को मंडल के रूप में बताया, जिसमें पड़ोसी राज्य मित्र या शत्रु हो सकते हैं

दंडनीति – राज्य की स्थिरता हेतु कठोर दंड व्यवस्था।राज्य का उद्देश्य कौटिल्य के अनुसार राज्य का प्राथमिक उद्देश्य प्रजा का भौतिक एवं नैतिक कल्याण सुनिश्चित करना है.

राजा का दायित्व – राजा को अपना हित प्रजा के हित में देखना चाहिए ‘‘अपनी प्रजा की खुशी में उसकी खुशी है प्रजा के कल्याण में उसका कल्याण है’’

राज्य की उत्पत्ति – कौटिल्य ने संविदा सिद्धांत का समर्थन कियाए यानी समाज की सुरक्षा और कल्याण के लिए लोगों द्वारा राज्य की स्थापना की गई

आर.पी. कांगले के अनुसार, कौटिल्य ने शासन को प्रबंधन और रणनीति का विज्ञान माना।

जैन धर्म का राजनीतिक चिंतन

अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, संयम जैसे सिद्धांतों ने राजनीतिक विचारों को नैतिक दिशा दी।जैन आचार्यों ने शासक को धर्मयुक्त शासन का पालन करने पर बल दिया।शासन में करुणाए दया और प्रजा के कल्याण को सर्वोपरि माना गया।

बौद्ध धर्म का राजनीतिक चिंतन

बुद्ध ने मध्यम मार्ग, करुणा, अहिंसा और समता पर बल दिया। अशोक के शासनकाल में बौद्ध सिद्धांतों का व्यावहारिक रूप दिखाई देता है।

धम्म नीति (Dhamma Policy) – धार्मिक सहिष्णुता, सामाजिक कल्याण, नैतिक शासन। शिलालेखों में प्रजा के प्रति उत्तरदायित्व और न्यायपूर्ण आचरण पर बल दियाबौद्ध राजनीतिक चिंतन ने सत्ता को नैतिक जिम्मेदारी के रूप में परिभाषित किया।

जैसा कि डी.सी. सरकार कहते हैं"अशोक के शासनकाल में धर्म और राजनीति का सम्मिश्रण देखा गया जहाँ अहिंसा के बौद्ध आदर्श को सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए राजनीतिक ढांचे में एकीकृत किया गया"
अशोक ने स्वयं कहा था

"मैं यह सुनिश्चित करके लोगों के कल्याण को बढ़ावा देना अपना कर्तव्य समझता हूँ कि वे धर्म के मार्ग पर चलें।"

अशोक के शिलालेख, शिलालेख सत्ता और नैतिक कर्तव्य के समन्वय को दर्शाता है।

प्राचीन भारत की धार्मिक और दार्शनिक परंपराओं ने वेदों, उपनिषदों, महाभारत, अर्थशास्त्र, मनुस्मृति और जैन एवं बौद्ध धर्म की शिक्षाओं जैसे ग्रंथों के माध्यम से भारतीय राजनीतिक चिंतन की नींव रखी। हालाँकि इन परंपराओं ने शासकों और शासन की भूमिका पर अक्सर अलग-अलग विचार प्रस्तुत किए लेकिन न्याय, नैतिक कर्तव्य और सामाजिक व्यवस्था जैसे

विषयों पर उनकी मान्यताएँ समान थीं। प्राचीन भारत में राजनीतिक चिंतन में धार्मिक सिद्धांतों के एकीकरण ने एक ऐसा ढाँचा तैयार किया जहाँ शासन केवल शक्ति का विषय नहीं था, बल्कि धर्म की रक्षा, समाज के कल्याण को बढ़ावा देने और नैतिक आचरण सुनिश्चित करने का दायित्व था। राजनीति पर इन धार्मिक प्रभावों की विरासत आज भी भारतीय राजनीतिक दर्शन में गूंजती रहती है।

मध्यकालीन भारत की राजनीतिक विचारधारा:-

मध्य युग में राजनीतिक सत्ता सम्राट के हाथों में निहित थी। वह प्रशासनिक संस्थाओं के एक सुव्यवस्थित नेटवर्क के माध्यम से सत्ता का प्रयोग करता था संरक्षण प्रदान करता था सेनाएँ खड़ी करता था और कूटनीति का संचालन करता था। 'नीति' राजा और समाज के अभिजात वर्ग से बनी सलाहकार परिषद द्वारा निर्धारित की जाती थी।

फतवा.ए.जहांदारी के लेखक बरनी जैसे विद्वानों ने मुस्लिम शासकों के लिए एक आदर्श संहिता प्रस्तुत की, जिसमें शरीयत और कुशल शासन दोनों महत्वपूर्ण थे।

मध्यकालीन भारत की राजनीतिक विचारधारा सामंतवाद पर आधारित थी जहाँ सत्ता राजा के हाथों में केंद्रित थी लेकिन सामाजिक अनुचरों और सामंतों के बीच निष्ठा की जंजीरों से बंधी थी। राजा एक संरक्षक के रूप में कार्य करता था और प्रशासनिक तथा कूटनीतिक गतिविधियों का संचालन करता था। हालांकि राजा की शक्ति पर दैवीय अधिकार, सामाजिक अनुबंध और जन इच्छा जैसी सीमाएँ भी थीं। भारतीय राजनीतिक चिंतन में धर्मशास्त्र और 'नीति' के संकलन जैसे ग्रंथ भी शामिल थे जो शासकों के नैतिक कर्तव्यों और सामाजिक,राजनीतिक व्यवस्था के प्रबंधन पर बल देते थे।

औपनिवेशिक कालीन राजनीतिक चिंतन

प्रारंभिक सुधारवादी राजनीतिक चिंतन (18वीं शताब्दी के अंत – 19वीं शताब्दी के मध्य):-इस समय भारतीय समाज अंधविश्वास,जातिगत बंधनों और रूढ़िवाद से ग्रसित था। ब्रिटिश शासन ने शिक्षा, प्रेस और संचार साधनों के माध्यम से आधुनिकता के बीज बोए। राजा राममोहन राय ने सामाजिक सुधार स्त्री शिक्षा, सती प्रथा उन्मूलन,स्वतंत्र प्रेस के पक्षधर के रूप में कार्य किया दयानंद सरस्वती ने "स्वराज्य" और वैदिक मूल्यों पर आधारित सामाजिक-राजनीतिक सुधार का प्रयास किया। औपनिवेशिक काल का राजनीतिक चिंतन भारतीय लोकतंत्र की बुनियाद बना।शुरुआती दौर में यह सामाजिक सुधार और संवैधानिक सुधार तक सीमित था।

राष्ट्रवाद और राजनीतिक जागरण (19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध – 20वीं शताब्दी के प्रारंभ):-

इस दौर में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना (1885) हुई। प्रारंभिक नेता उदारवादी (Moderates) थे जिन्होंने संवैधानिक सुधार और अंग्रेजों से सहयोग की नीति अपनाई। उदारवादी नेता (गोखले, दादा भाई नौरोजी): ‘‘ड्रेन थ्योरी’’, क्रमिक सुधार बल दिया। उग्रवादी नेता (बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चंद्र पाल, लाला लाजपत राय): स्वराज और बहिष्कार (Boycott) का नारा दिया। क्रांतिकारी विचारधारा ने गुप्त संगठनों और सशस्त्र क्रांति पर आधारित राजनीति विचारों पर बल दिया।

गांधी युग और समाज आधारित राजनीतिक चिंतन (1915–1947):-

महात्मा गांधी के अनुसार राजनीतिक संघर्ष का आधार सत्य और अहिंसा पर आधारित होना चाहिए। सत्याग्रह का उपयोग अत्याचार के विरुद्ध अहिंसक प्रतिरोध के रूप में होना चाहिए। ग्राम स्वराज की अवधारणा में विकेन्द्रीकृत राजनीति और आत्मनिर्भरता पर जोर दिया पण्डित जवाहर लाल नेहरू वैज्ञानिक समाजवाद,आधुनिक उद्योग और लोकतांत्रिक गणराज्य की अवधारणा का सिद्धांत अपने राजनीतिक चिन्तन में दिया। भीमराव अम्बेडकर ने सामाजिक न्याय,दलितों की राजनीतिक भागीदारी,संविधानवाद पर अपने विचार प्रकट किया। गांधी,नेहरू,अम्बेडकर और सुभाषचंद्र बोस जैसे नेताओं ने भारतीय संविधान और आज़ाद भारत की राजनीतिक व्यवस्था की आधारशिला रखी।

भारतीय संविधान में राजनीतिक चिंतन की अभिव्यक्ति:-

भारतीय संविधान में जनता ही सर्वोपरि को सर्वोपरि माना गया है। सार्वभौम मताधिकार और प्रतिनिधि सरकार की बात की गई है। लोकतांत्रिक,गणराज्य,धर्मनिरपेक्षता,समाजवाद और कल्याणकारी राज्य की अवधारणा भारतीय संविधान में दी गई है। 1773 के रेगुलेटिंग एक्ट से प्रारंभ होकर 1947 के भारत शासन अधिनियम तक विभिन्न कानून और सुधार होते रहे जिसने भारतीय संविधान के विकास की नींव रखी।

विकसित भारत 2047 अमृतकाल की संकल्पना: –

संविधानिक मूल्यों के साथ आधुनिकता

विकसित भारत 2047 की संकल्पना भारत को उसकी स्वतंत्रता की 100वीं वर्षगांठ तक एक पूर्ण विकसित राष्ट्र बनाने का भारत सरकार का महत्त्वाकांक्षी विजन है। इस संकल्पना में संविधान के मूल्यों के साथ आधुनिकता का संतुलन बनाए रखते हुए आर्थिक,सामाजिक,पर्यावरणीय और तकनीकी क्षेत्रों में समग्र विकास को बढ़ावा देना शामिल है। विकसित भारत की संकल्पना में संविधान के मूल्यों को आधार माना गया है जिसमें सामाजिक न्याय, समानता, धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र शामिल हैं। साथ यह आधुनिकता की प्रक्रियाओं जैसे तकनीकी प्रगति, डिजिटल इंडिया,स्वच्छता और नवाचार के साथ मेल खाती है। इसका उद्देश्य एक ऐसा भारत बनाना है जहाँ नागरिकों को समान अवसर मिलें और वे संविधान के आदर्शों के साथ सामंजस्यपूर्ण विकास करें। इसलिए यह परियोजना न केवल भौतिक विकास बल्कि नैतिक और सामाजिक विकास को भी समाहित करती है।

समावेशी न्याय और सतत विकास @2047

भारत 2047 आज़ादी के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर "विकसित भारत" की परिकल्पना करता है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए समावेशी न्याय और सतत विकास की अवधारणाएँ एक-दूसरे की पूरक हैं।

न्यायपालिका को सशक्त करना,अधिक न्यायाधीशों की नियुक्ति, तारीख पर तारीख के मामलों को कम करना,डिजिटल अनुबंध प्रवर्तन को बढ़ावा देना शामिल है। जवाबदेही के लिए स्वतंत्र सिविल सेवा बोर्ड और नौकरशाही का आधुनिकीकरण,मतदाता एवं चुनाव सुधारों के जरिए पारदर्शिता सुनिश्चित करना,सभी नागरिकों के लिए समान अवसर और वित्तीय समावेशन सुनिश्चित करना शामिल हैं।

पर्यावरणीय स्थिरता के लिए हरित ऊर्जा,स्वच्छता,जलवायु-प्रतिरोधी शहरों का विकास।24x7 किफायती बुनियादी सुविधाएँ और शहरों में हरित मानदंड लागू करना। व्यापार,लॉजिस्टिक्सऔर डिजिटल अवसंरचना को आधुनिक बनाकर आर्थिक विकास को टिकाऊ बनाना। वित्तीय समावेशन और निवेशकों व उपभोक्ताओं को सशक्त बनाना ताकि सतत निवेश और विकास हो सके।

वैश्विक नेतृत्व में भारत की भूमिका (शांति, सहअस्तित्व, लोकतांत्रिक मूल्य) @2047:-

भारत 2047 तक वैश्विक नेतृत्व में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की दिशा में अग्रसर है जिसमें शांति,सहअस्तित्व और लोकतांत्रिक मूल्यों को केंद्र में रखा गया है। भारत का वैश्विक दृष्टिकोण शांति स्थापना बहुपक्षीय सहयोग और लोकतंत्र के संरक्षण पर आधारित है जिससे वह एक समावेशी और जिम्मेदार वैश्विक शक्ति बनना चाहता है।

शांति एवं सह-अस्तित्व में भारत की भूमिका

भारत की विदेश नीति सदियों से शांति और सह-अस्तित्व के सिद्धांतों पर आधारित रही है। भारत संघर्षों को संवाद के जरिए हल करने पर जोर देता है और आतंकवाद तथा कट्टरवाद के खिलाफ वैश्विक स्तर पर एकजुटता का पक्षधर है। 2047 तक भारत शांति स्थापना और बहुपक्षीय वैश्विक साझेदारी में अपनी भूमिका को मजबूत करता दिख रहा है। इसके अलावा भारत की संस्कृति और दर्शन में समाहित सहिष्णुता और बहुलता शांति के लिए एक आधारशिला बनी है ।

लोकतांत्रिक मूल्यों का नेतृत्व

भारत के बुनियादी मूल्य लोकतंत्र,बहुलवाद और मानवाधिकारों पर आधारित हैं। भारत अपने संवैधानिक लोकतंत्र के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों भाषाओं और धर्मों के बीच एकता स्थापित करता है। 2047 तक भारत का लक्ष्य एक मजबूत लोकतंत्र और लोकतांत्रिक संस्थानों को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देना है जिससे वह विश्व की सबसे बड़ी लोकतंत्र के रूप में अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह करे ।

वैश्विक नेतृत्व में भारत की रणनीति

भारत की रणनीति में बहुपक्षीय कूटनीति,सतत विकास,और वैश्विक आर्थिक प्रतिस्पर्धा में नेतृत्व शामिल हैं। नीतिगत सुधार नवाचार और टिकाऊ ऊर्जा क्षेत्रों में वैश्विक भागीदारी भारत की वैश्विक स्तर पर सशक्त उपस्थिति सुनिश्चित करेंगी। इसके अतिरिक्त भारत कोविड जैसी आपदाओं में त्वरित मानवीय सहायता और जलवायु कार्रवाई में भी अग्रणी देश बनेगा। 2047

तक भारत विश्व मंच पर शांति,सहअस्तित्व और लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए एक मजबूत और विश्वसनीय नेतृत्व करेगा जो वैश्विक स्थिरता और समावेशी विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। ये लक्ष्य भारत के सामाजिक,सांस्कृतिक,आर्थिक और कूटनीतिक प्रयासों के केंद्र में हैं।?

निष्कर्ष :-

भारतीय राजनीतिक विचारधारा का विकास एक सतत् और बहुआयामी प्रक्रिया रहा है जिसकी शुरुआत प्राचीन वैदिक परंपरा से होती है और जिसका भविष्य 2047 के अमृतकाल तक विस्तृत है। प्राचीन काल में राजनीतिक चिंतन धर्म, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व से जुड़ा था – जैसे ऋग्वेद का "धर्मपालक राजा", कौटिल्य का "व्यावहारिक राज्यशास्त्र", तथा बौद्ध-जैन धर्म का "अहिंसा और दया पर आधारित कल्याणकारी शासन"। मध्यकालीन भारत में राजनीति धर्म और सत्ता के केंद्रीकरण से प्रभावित रही परंतु साथ ही नीतिशास्त्र और प्रशासनिक संस्थाओं ने राजनीतिक स्थायित्व में योगदान दिया। औपनिवेशिक काल में आधुनिक शिक्षा, सामाजिक सुधार आंदोलनों और राष्ट्रवादी आंदोलन ने भारतीय राजनीति को जागरूक किया। राजा राममोहन राय से लेकर गांधी, नेहरू,अंबेडकर और सुभाषचंद्र बोस तक का राजनीतिक चिंतन स्वतंत्रता, समानता और आत्मनिर्भरता पर केन्द्रित रहा। भारतीय संविधान (1950) आधुनिक भारत का राजनीतिक दस्तावेज है जिसने जनता की संप्रभुता, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता समाजवाद और कल्याणकारी राज्य के मूल्यों को संस्थागत रूप दिया। यह प्राचीन परंपराओं मध्यकालीन अनुभवों और आधुनिक लोकतांत्रिक आदर्शों का समन्वित रूप है। 2047 के अमृतकाल की दृष्टि से भारत संविधानिक आदर्शों और आधुनिक तकनीकी-आर्थिक विकास को मिलाकर एक विकसित शक्तिशाली और लोकतांत्रिक राष्ट्र बनने की दिशा में अग्रसर है। इस दौर में समावेशी न्याय, सतत विकास,पर्यावरणीय संतुलन,पारदर्शी शासन और वैश्विक नेतृत्व को ही भारतीय राजनीतिक विचारधारा का केंद्र बिंदु माना गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ:-

Majumdar, R. C. The Vedic Age. Bharatiya Vidya Bhavan, 1991
आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन – लेखक: डॉ. वी.पी. वर्मा
भारतीय राजनीतिक चिन्तन (Indian Political Thought, M.A.) – डॉ. बी.एल. फड़िया
बिपिन चंद्र – India's Struggle for Independence
विकसित भारत: भारत @ 2047 - आदित्य पिट्टी
Judith Brown – Gandhi: Prisoner of Hope
Percival Spear – The Oxford History of Modern India
Peter Robb – A History of India
बी.आर. आंबेडकर – Annihilation of Caste और संविधान सभा के भाषण
रामचन्द्र गुहा – India After Gandhi
Bharat-2047: A Vision for India's Future -Prof. Brij Kishore Kuthiala
Percival Spear – The Oxford History of Modern India